2 यूहन्ना

मुझे बुजुर्ग की ओर से उस महिला को—जो परमेश्वर
के द्वारा चुनी गयी है तथा उसके बालकों के नाम जिन्हें
मैं सत्य के सहभागी व्यक्तियों के रूप में प्रेम करता हूँ।
केवल मैं ही तुम्हें प्रेम नहीं करता हूँ, बल्कि वे सभी
तुम्हें प्रेम करते हैं जो सत्य को जान गये हैं। **2**यह उसी
सत्य के कारण हुआ है जो हममें निवास करता है और
जो सदा सदा हमारे साथ रहेगा।

3परम पिता परमेश्वर की ओर से उसका अनुग्रह,
दया और शांति सदा हमारे साथ रहेंगी तथा परम पिता
परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह की ओर से सत्य और प्रेम
में हमारी स्थिति बनी रहेगी।

4तुम्हारे पुत्र-पुत्रियों को उस सत्य के अनुसार जीवन
जीते देख कर जिसका आदेश हमें परम पिता से प्राप्त
हुआ है, मैं बहुत आनन्दित हुआ हूँ, **5**और अब हे
महिला, मैं तुम्हें कोई नया आदेश नहीं बल्कि उसी
आदेश को लिख रहा हूँ, जिसे हमने अनादि काल से
पाया है हमें परस्पर प्रेम करना चाहिये।

6प्रेम का अर्थ यही है कि हम उसके आदेशों पर
चलें। यह वही आदेश है जिसे तुमने प्रारम्भ से ही सुना
है कि तुम्हें प्रेमपूर्वक जीना चाहिये।

7संसार में बहुत से भटकाने वाले हैं। ऐसा व्यक्ति जो
यह नहीं मानता कि इस धरती पर मनुष्य के रूप में
यीशु मसीह आया है, वह छली है तथा मसीह का शत्रु
है। **8**स्वयं को सावधान बनाये रखो! ताकि तुम उसे गँवा
न बैठो जिसके लिये हमने कठोर परिश्रम किया है,
बल्कि तुम्हें तो तुम्हारा पूरा प्रतिफल प्राप्त करना है।

9जो कोई बहुत दूर चला जाता है और मसीह के
विषय में दिये गये सच्चे उपदेश में टिका नहीं रहता, वह
परमेश्वर को प्राप्त नहीं करता और जो उसकी शिक्षा
में बना रहता है, परम पिता और पुत्र दोनों ही उसके
पास हैं। **10**यदि कोई तुम्हारे पास आकर इस उपदेश को
नहीं देता है तो अपने घर उसका आदर सत्कार मत
करो तथा उसके स्वागत में 'नमस्कार' भी मत कहो।
11क्योंकि जो ऐसे व्यक्ति का सत्कार करता है, वह
उसके बुरे कामों में भागीदार बनता है। **12**यद्यपि तुम्हें
लिखने को मेरे पास बहुत सी बातें हैं किन्तु उन्हें मैं
लेखनी और स्याही से नहीं लिखना चाहता। बल्कि मुझे
आशा है कि तुम्हारे पास आकर आमने सामने बैठ
बातें करूँगा। जिससे हमारा आनन्द परिपूर्ण हो। **13**तेरी
बहन* के पुत्र पुत्रियों का तुझे नमस्कार पहुँचे।

बहन यहाँ 'बहन' से अभिप्राय उस स्थानीय कलीसिया से मालूम पड़ता है, जहाँ से यूहन्ना ने यह पत्र लिखा है तथा 'पुत्र पुत्रियों, से अभिप्राय है उस कलीसिया के सदस्य जो अपना नमस्कार भेज रहे हैं।